

PARIS, 9th June, 1989.

प्रिय आर्किवेंश,

आपके दो फ्र गिले / देर से लिख (हाई) / पर न्या कहें / व्यस्तता
एक बीमारी है, जिससे कूना असमर्थ हो जाता।

कुरी है कि रंग आपसे मिल गये और आप भी आश्रम में व्यस्त हैं /
स्वास्थ्य पर ध्यान दें। इसके बिना नहीं है जीवन, ना हि फला।

आपका सिल्वेस्ट्रिन का पोट्रेटलियो अच्छा बना है। फ्रेन्च स्टावस पर नियंत्रण आया है। प्रदर्शनी
अक्टोबर में दिल्ली में है। मन लगाकर काम करें। यह प्रदर्शनी महत्वपूर्ण रहेगी और आशा है
कि तीन चित्रकारों का फ्रांस के लिये क्षेत्र वृत्ति मिल सकेगी। आप अपना वायोडेरा पूरा
करें। यानी जो मैंने दिल्ली भिजाया था उसके नई प्रदर्शनी और कार्यक्रम २२ और २४ के आ
धुन का लगा दें। एक रंगीन कैलेंडर बनाने की योजना है। श्री ओ० पी० जैन इसे Finance
करेंगे। एम्बेसी के पत्र के ध्यान से पढ़ें और सच समझकर उन्हे समय पर पत्र दें। कोई
विचार से तीन बातें महत्वपूर्ण हैं: ① आपके ५ चित्र अच्छे से अच्छे होने चाहिये।
② पूरी सामग्री, फिर चित्र अच्छी फ्रेम करके समय पर भिजायें। ③ आप अवश्य फ्रेम पर ध्यान

दाख दें। आपने मुझ से अवश्य कहा था कि मैं आपके चित्रों के बारे में लिखें। मैंने जवाब
दिया था कि मुझे लिखना नहीं आता, बहुत समय लगता है। मेरे लिये आवश्यक है कि बार बार चित्र
देखें, सोचें, बात करें। आपके सब से ऊँचा चित्र पिछले साल गोपाल बिक्रमल में देखने मिले।
फोगेलड कैलेंडर में क्या चित्र भी महत्वपूर्ण है। आपकी भिजाई फोटों से कुछ आनन्दाना नहीं होता।
इसी लिये जरूरी है कि मैं आपके उपलब्ध चित्र देखें, आपसे बात करें। ~~आपसे~~ मैंने
अज है, कि इस में गलती नहीं घेनी चाहिये। मेरी जिन्दगी में मैंने केवल तीन चित्रकारों पर कुछ
ह लिखा है और हर बार एक पत्र लिख के लिये ३ या ४ साल लगे हैं। पुस्तक के भी मैंने
तीन साल इन्तजार कराया। न्या आपसे धैर्य होगा कि गलती क्यों? पिछले साल से
आपके बारे में विश्व कला और उद्योग राजपेयी ने लिखा है। वे फोगेलड से सहायक होंगे।
अगले साल मैं फिर बात आ (हाई) आशा है चित्र देख सकेगा। पूरी स्वागतता से काम
को।

आशा है कि आप समझ सकेंगे। काला ~~व्यक्ति~~ ^{विदु} "तप" है। "संसाधन" ~~विदु~~ ^{विदु} कि पड़कना चाहिए।

कुछ विश्वास है कि जीवन और फला की ओर हमारी प्रवृत्ति धार्मिक होनी
 चाहिये, यानी वैसी चित्र - जैसे हमारे प्राचीन देश में ~~हमारे~~ हमारे आचार्यों
 ने हमारे बुद्धों ने हमें बताया है, कितने विश्वास से, कितनी दृढ़ता से।
 भले ही समय बदला है, फला संसार भी बदला है, फला अवसाय, राजनीति
 मिले जुले हैं, फिर भी ~~बुद्ध~~ बुद्ध नहीं बदला कलालकूट स्थाय। अविता, संगीत,
 फला अपना अपना तर्क बनाये बैठी हैं, हमेशा की तरह।

चित्र फल की दृष्टिगत से हमें "सुख तर्क" के समझना है और अपनी आधि व्यष्टि
 की ओर जाना है। इसी लिये कि कहेंगे कि 'धैर्य रखें'। हर बात समय पर
 ही होनी चाहिये। कुछ आपके चित्र पसन्द है, पर उन्हें बुद्ध समय तक कुछ
 और भी देवना है।

अपने सिखाया दें। मोपाल की कबरे रैसी हैं। फल रैसा चल रहा है।
 हम इसी (चित्र) के आद के लिये गोरबियो जा रहे हैं। नीचे पूरा
 पता दे रहा हूँ। इसी पते पर जवाब दें।

हमारी ओर से स्नेह और शुभकामनाएं

P.M.H.
 Rue de Chateaux
 GORPIO
 06500 MENTON
 FRANCE